गंगानगर परिचय

[गंगानगर जिले का भौगोलिक, ऐतिहासिक पुरातत्व एवं
सामाजिक विवेचन]

लेखक
ओमप्रकाश गुप्त
एम ए, बी एड, एल-एल बी
विद्यालय उपनिरीक्षक
श्री गंगानगर

—•—

प्रकाशक
अग्रवाल साहित्य सदन
श्री गंगानगर

प्रकाशक :
अग्रवाल साहित्य सदन
श्रीगंगानगर

प्रथम संस्करण
१६६६

मूल्य ४ रु० ५० पै० मात्र

मुद्रक स्वामी प्रेस, मेरठ


बीकानेर मण्डल
पाकिस्तान
पंजाब
जिला बीकानेर
जिला चूरू
जोधपुर

प्राक्कथन

1.— गगानगर जिला राजस्थान मे बडा महत्वपूर्ण स्थान रखता है परन्तु इस जिले के विषय मे सम्यक जानकारी प्रस्तुत करने वाली एक भी पुस्तक अभी तक कही से प्रकाशित नही हुई । इस अभाव की पूर्ती हेतु इस पुस्तक को लिखने का प्रयास किया गया है । इस पुस्तक के लिखने की प्रेरणा के लिए मै माननीय श्री निरजन नाथ जी आचार्य पूर्व उप-शिक्षा मत्री, राजस्थान, का आभारी हू जिन्होने राजस्थान के शिक्षा प्रशासनिक अधिकारियो की दिसम्बर १९६७ मे नवलगढ मे हुई कॉफ्रेस मे यह सुझाव रखा था कि "राजस्थान के प्रत्येक जिले पर एक ऐसी पुस्तक उपलब्ध की जानी चाहिए जिससे बच्चे-बूढ़े सभी उस जिले के भूगोल, इतिहास, सस्कृति, पुरातत्व, कला एव प्रशासन के सम्बन्ध मे जान सकें"। साथ ही मै श्रीअनिल बोदिया अपर निदेशक, प्राथमिक एव माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, का भी कृतज्ञ हूँ जिनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन भी मुझे समय समय पर प्राप्त होता रहा है ।

श्री रामधनदास गोयल, प्रधानाध्यापक, राजकीय बहुद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, श्री गगानगर एव श्री जानकीप्रसाद उपाध्याय, प्रधानाध्यापक,

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लालगढ जाटान ने मेरा उत्साह बढाने मे कोई कसर न उठा रखी, उनकी बहुमूल्य सहायता को भी म नही भूल सकता। मुझे इस पुस्तक के लिखने म मैंने हिन्दी और अग्रेजी पुस्तकों से सहायता मिली है अतएव मैं उनके लेखको को धन्यवाद देता हूँ।

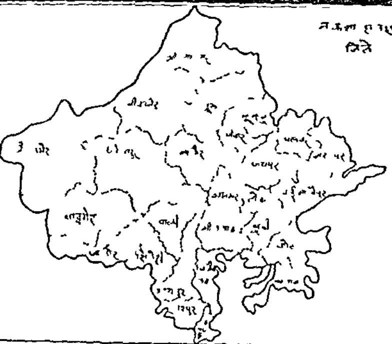
विश्वास है कि अपने जिले के बारे मे बहुत सी बातो की जानकारी प्राप्त कर लेने पर बच्चो मे राजस्थान एव भारत के बारे मे और अधिक जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा बढेगी और वे ज्ञान प्राप्ती की ओर झुकेंगे। यह पुस्तक बालको को ही नही अन्य व्यक्तियो के लिए भी जो गगानगर जिले के बारे मे कुछ जानकारी चाहेंगे, बडी लाभदायक सिद्ध होगी, ऐसी मेरी आशा है।

इस प्रकार के प्रथम प्रयास म कमियों एव त्रुटियो का रह जाना अवश्यम्भावी है अत इनके सुधार के लिए सुझाव सहर्ष आमन्त्रित है जिससे अगले सस्करण मे उनका समावेश किया जा सके।

श्री गगानगर — ओमप्रकाश गुप्ता

-३ जून १९६६

अनुक्रमणिका


जिले

गंगानगर परिचय

१–भौगोलिक वर्णन

(१) स्थिति और प्राकृतिक दशा

भूमिका

वर्तमान राजस्थान राज्य राजपूताने की देशी रियासतों के एकीकरण के फलस्वरूप ३० मार्च सन् १९४९ को बना। इस नवनिर्मित राजस्थान में २६ जिले हैं जिनमें से हमारा गंगानगर भी एक है। राजस्थान के निर्माण से पहिले गंगानगर जिला बीकानेर राज्य का एक अंग था। उस समय बीकानेर राज्य में तीन जिले थे और उनमें इस जिले का प्रमुख स्थान था।

गंगानगर जिले का स्वरूप जैसा कि वर्तमान में दिखाई देता है अपने परिवर्तनों के साथ पिछले कुछ वर्षों में ही बना है। १९२७ से पहिले स्वयं गंगानगर नाम का अस्तित्व नहीं था। अनेक वर्षों तक बीकानेर राज्य चार निजामतों में बंटा हुआ था — बीकानेर, सुजानगढ़, रैणी और सूरतगढ़। रैणी निजामत के अन्तर्गत इस जिले की नोहर और भादरा तहसीलें आती थी और सूरतगढ़ निजामत में सूरतगढ़, हनुमानगढ़, मिर्जावाला तहसील और टीबी व अनूपगढ़ की उपतहसीलें थी। मिर्जावाला में १५-१०-१९२० को तहसील का हैडक्वार्टर रामनगर आ गया। सन १९२७ में तहसीलों की सीमाओं में परिवर्तन हुआ और मिर्जावाला, अनूपगढ़ और सूरतगढ़ तहसीलों के कुछ गांवों को मिलाकर ५ नई तहसील गंगानगर, करनपुर, पदमपुर, रायसिंहनगर और अनूपगढ़ कायम की गई। उसी समय बीकानेर राज्य की दो डिवीजनें गंगानगर और बीकानेर में बांटी गयीं जिसमें गंगानगर डिवीजन

म गगानगर हनुमानगढ़, नोहर भादरा रायसिंहनगर, करनपुर, पदमपुर सूरतगढ़ और अनूपगढ़ तहसील आई। गंगानगर जिला जमाकि वतमान मे है १९४६ म बना।

भौगोलिक स्थिति और विस्तार—

गगानगर जिला राजस्थान के उत्तर म उस प्रदेश म स्थित है जिसे थार का रगिस्तान कहते है। यह २८°४ म ३०°६ उत्तरी अक्षास और ७२°३० स ७४°३० पूर्वी देशान्तर रेखाओ के बीच फैला हुआ है। इसकी समुद्र के धरातल स ऊचाई १७२ मीटर म १७६ मीटर तक है। इसका आकार विषम कोण त्रिभुज के समान है। यह जिला पूव स पश्चिम तक २४० किलोमीटर और उत्तर म दक्षिण तक १७० किलोमीटर है। इसका क्षेत्रफल २० ४८ वग किलोमीटर है। क्षेत्रफल की दृष्टि स राजस्थान मे इसका पाचवां स्थान है।

सीमा—

इसकी सीमा उत्तर पूव म पजाब स उत्तर पश्चिम म पाकिस्तान स, दक्षिण में बीकानेर और चूरू जिला से लगती है। पाकिस्तान के साथ इसकी अतराष्ट्रीय सीमा २०४ किलोमीटर लम्बा है।

प्राकृतिक उत्पत्ति—

भौगोलिक सिद्धान्त के अनुसार एसा माना जाता है कि यह क्षेत्र प्रारम्भ म रगिस्तान नही था बल्कि जुरेसिक, क्रीटेशियस तथा इयोसीन युग म समुद्र द्वारा ढका हुआ था। परन्तु अपर टर्शरी युग म यह भाग पृथ्वी की आतरिक शक्तियो के परिवतनो के कारण उठने लगा। इस युग म पृथ्वी लगातार कुछ स्थानो पर दब रही थी तो राजस्थान के क्षेत्र म उठ रही थी जिसके कारण समुद्र समाप्त हो गया तथा उसके स्थान पर शुष्क रेतीला भाग प्रकट हुआ। प्लीस्टोसीन युग म वतमान समुद्र तट स अरावली तक का

भाग समुद्र में डूबा हुआ था। इसमें नदियां गिरीं, रेत जमा हुई, रेतीले पत्थर व अन्य प्रकार की चट्टानें जमीं। तत्पश्चात् पृथ्वी की आन्तरिक हलचलों के कारण समुद्र दक्षिण व पश्चिम में हट गया और रेतीला भाग प्रकट हुआ। इस क्षेत्र के भूपटल पर नवीन परिवर्तनों ने स्थान लिया। सरस्वती और दृषद्वती नदियाँ जो इस प्रदेश में होकर बहती थीं सूख गईं तथा जलवायु में भी परिवर्तन होने लगा जिससे यह क्षेत्र और भी शुष्क होकर वर्तमान स्वरूप में आ गया।

प्राकृतिक दशा—

इसका क्षेत्रफल इतना विस्तृत होने पर भी इस जिले की प्राकृतिक दशा सर्वत्र समान ही है जहाँ न कोई वन है, न कोई ऊँचा पहाड़। वर्षा न होने के बराबर होने से सारा क्षेत्र शुष्क रेगिस्तान है। इस जिले के पूर्वी और दक्षिणी भाग में बालू रेत भरा है तथा स्थान स्थान पर बालू रेत के टीले जो धोरे या टीबे कहलाते हैं बालू की पहाड़ियों की भांति दिखाई देते हैं। जब तेज वायु चलती है तो रेत इस प्रकार चलता है जैसे समुद्र की लहरें चलती हों। उनके मार्ग में जहाँ जरा भी किसी घास, फूस तथा और वस्तु की रुकावट हुई वहां पुनः नव रेत पड़ जाती है और टीले बन जाते हैं। ये टीले स्थायी नहीं होते और वायु के साथ साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं। कभी कभी तो एक घण्टे से कम समय में ही ये अपना स्थान बदल देते हैं। इस मिट्टी का कण मोटा होता है व पानी की नमी रोक रखने की शक्ति प्राय नहीं होती।

घग्घर नदी की घाटी जो नियाली कहलाती है वह इस जिले के मध्य भाग में आती है। इसके आसपास में लगातार रेत के टीले हैं और इनके बीच में पानी भर जाता है जिन्हें स्थानीय भाषा में जोहड़ अथवा डाबड़ी के नाम से पुकारते हैं वहां मिट्टी कुछ कड़ी होती है और कहीं कहीं चिकनी होती है। इसके अतिरिक्त पश्चिमी भाग में अर्थात् अनूपगढ़ के पास एक विशाल भूभाग है जिसे 'खिनरण' कहते हैं। प्राकृतिक आधार बहुताय

स हान व कारण यह भूमि मनी के लायक नही है। घग्गर स प~ जि~
का सब स अधिक उपजाऊ हिस्सा मिलता है। यद्यपि उधर की भूमि प्रन~
उत्तर की तरफ अधिक समतल और कम रतीली हाती गई है। अनूपगढ़ और
सूरतगढ़ के उत्तर की भूमि एक प्रकार की चिकनी मिट्टी की बनी है जिस
को 'बगी' कहते हैं। गगानगर, हनुमानगढ़ और टीबी तहसीलो म सबस
अधिक उपजाऊ मिट्टी मिलती है जो चिकनी है उस 'राठी' क नाम स
पुकारते हैं। ऐसी मिट्टी हनुमानगढ़ स हिसार की सीमा तक चली गई
और जस जस पूव की ओर बढ़त चल जात है उसकी किस्म अच्छी ह~
जाती है और उसका पीली मिट्टी की सना दते है। हनुमानगढ़ के उत्तर
हल्की मिट्टी को 'मरा' क नाम स पुकारते ह। इसका रग कुछ पीला
लिय हुए है और जल साखन म अच्छी होने क कारण ठीक सिचाई हान
यहा उत्तम पदावार हाती है।

इस जिल म गर्मी बहुत अधिक पड़ती है। गर्मियो म आंधिय~
अधडों का जोर रहता है। वर्षा बहुत कम प्राय नहीं क बराबर हाता है।
मीलो तक पानी कहा नही मिलता।

नदियाँ—

इस जिल म साल भर बहन वाली नदी एक भी नहा है। केवल एक
नदी ऐसी है जो वर्षा ऋतु म इस जिले म प्रवेश कर इसक कुछ हिस्सो म
जल पहुचाती है। इस नदी को घग्घर या 'नाली' के नाम स पुकारते ह।
इसका प्राचीन नाम 'हकरा' है। उस समय हकरा नदी सरस्वती औ~
मारकण्डेय की धाराओ स मिलकर बनती थी। उनका सगम सूरतगढ़ म कुछ
ऊपर रामपुरा पर हाता था। आजकल मारकण्डेय सिरसा तक पहुच कर
ही मरुभूमि म लुप्त हो जाती है। घग्घर का उद्गम स्थान सिरमौर जिल
क अन्तगत हिमालय पवत के नीचे का ढलुआ भाग है। पटियाला जिल और
हिसार जिले म बहकर यह तलवाड़ा झील के निकट गगानगर जिले म
प्रवेश करती है। प्राचीन काल म यह इस जिले क सूरतगढ़, अनूपगढ आदि




नक्शा गंगानगर
जिला - वर्षा
पंजाब
100 मि मी से नीचे
100 से 200 मि. मी.
200 से 300 मि. मी
पैमाना
२२ मील
पश्चिमी पाकिस्तान
बीकानेर जिला
चूरू जिला

स्थाना के पास से होती हुई भावलपुर राज्य के मिनचिनाबाद इलाके में गुजरकर सिंधु नदी में जा मिलती थी। पर अब यह वर्षा ऋतु को छोड़कर शुष्क रहती है और इस समय हनुमानगढ़ के पश्चिम से बहती है और आगे चलकर बंजर भूमि में सूख जाती है। पानी की मात्रा इतनी कम होती थी कि स्थानीयरूप से इसे 'नाली' का नाम दिया जाने लगा।

(२) जलवायु

किसी भूखण्ड के वायु मण्डल की दशा अर्थात तापक्रम वर्षा, नमी, वायु की दशा एवं दबाव के वार्षिक औसत को जलवायु कहते हैं। जलवायु में किसी स्थल का मौसम सम्बन्धी वार्षिक चर्चा रहती है। किसी भी प्रदेश में वहां की जलवायु विशेष महत्व रखती है क्योंकि जलवायु न केवल कृषि की उपज को ही प्रभावित करती है वरन् मानव-जीवन के आर्थिक और साधारण जीवन को भी नियंत्रित करती है।

ग्रीष्म ऋतु की जलवायु अवस्था—

गंगानगर जिला एक गर्म प्रदेश है। यहां गर्मी के मौसम में बहुत कठोर गर्मी पड़ती है। इसके अतिरिक्त गर्मी का मौसम अन्य मौसमों से बड़ा होता है। साधारणतया गर्मी का मौसम अप्रैल से प्रारम्भ होकर अगस्त सितम्बर तक रहता है किन्तु मई व जून बहुत ही गर्म महीने होते हैं। गर्मी में अधिकतम तापक्रम ४२ सें० ग्रे० तक पहुंच जाता है। ग्रीष्म ऋतु में आकाश मेघहीन रहता है पर नीला नहीं क्योंकि धूल के कणों से वातावरण में पीलापन आ जाता है। गर्म हवाएं व रेत के तूफान चलते हैं जो भयंकर होते हैं। वातावरण की शुष्कता, मिट्टी की प्रकृति और प्राकृतिक वनस्पति के अभाव के कारण रात्रि में तापमान अचानक गिर जाता है। दिन की कड़ी गर्मी के बाद रात ठंडी हो जाती है क्योंकि धूप से तप्त हुई बालू रेत रात होते ही शीघ्र ठंडी होने लगती है जिसके कारण हवा भी ठंडी हो जाती है। इसी कारण से गर्मी के मौसम में रातें ठंडी और सुहावनी होती हैं और

तापक्रम २८° से ४० तक गिर जाता है। दिन में मनुष्य, पशु और पक्षी गरमी से व्याकुल हो जाते हैं। वनस्पति जल जाती है, जमीन झुलस जाती है। हरियाली केवल सिंचित खेतों में देखने को मिलती है अन्यथा सब ओर उजाड़ दीख पड़ता है। दोपहर को गर्म हवाएं चलती हैं जिन्हें लू कहते हैं। इन दिनों आपेक्षित आर्द्रता न्यूनतम होती है यहां तक कि वायु में एक प्रतिशत भी नमी नहीं होती।

अंधेरिया—

इन दिनों में दक्षिण और पश्चिम से हवाएं चलती हैं। ये अपने साथ रेत लाती हैं और ये रेत की अंधेरियां प्रायः तीसरे पहर आया करती हैं। इन अंधेरियों का रंग प्रायः पीला होता है, कभी कभी काला भी होता है। कभी कभी तो इन अंधेरियों में दिन में ही घोर अंधेरा छा जाता है और रात जैसा दृश्य उपस्थित हो जाता है। औसत रूप से वर्ष भर में इन आंधियों की संख्या २७ दिन की है। ये अंधेरियां आम तौर पर शुष्क होती हैं लेकिन कभी कभी इनके बाद साधारण वर्षा हो जाती है। मेह न भी पड़े परन्तु ठंडक हो जाती है। तापक्रम कम हो जाता है, विकलता दूर हो जाती है। इन अंधेरियों की गति ६० से ८० कि० मी० प्रतिघंटा तक होती है। इन अंधेरियों में मकानों की छतें और बड़े बड़े पेड़ तक उखड़ जाते हैं। इस प्रकार इनसे बड़ा नुकसान होता है।

नहर के आने के पूर्व ये अंधेरियां कई दिनों तक - यहां तक कि २-३ सप्ताह तक लगातार चलती थीं और कभी रात्रि में थोड़ी देर के लिए ठहर जाती थीं। कभी कभी लोगों का अपना खाना बनाना भी मुश्किल हो जाता था। परन्तु अब इन अंधेरियों का जोर और गति कम होती जा रही है। नहर की सिंचाई के कारण नमी की मात्रा बढ़ गई है और कभी कभी जुलाई और अगस्त में उमस हो जाती है।

वर्षा ऋतु—

इस जिले की गणना उन क्षेत्रों में की जाती है जहां वर्षा नहीं होती है। यह क्षेत्र मानसून की सीमा के छोर पर स्थित है अतः बंगाल की खाड़ी और अरब सागर से आने वाली दक्षिणी-पश्चिमी मानसून हवाओं से बीकानेर में औसत वर्षा १२५ से १५० मिलीमीटर तक हो जाती है। इसका कारण यह है कि इन हवाओं की अधिकांश आर्द्रता मरुभूमि को पार करते समय नष्ट हो जाती है। यहाँ वर्षा जुलाई के आरम्भ में शुरू होती है। वर्षा ऋतु होने के बाद मानसून वायु निरन्तर नहीं चलती रहती, बल्कि वह कुछ अवधि के अन्तर से नये भाव के रूप में आती है। इसमें कई कई दिन बाद वर्षा होती है। इस वर्षा की एक विशेषता इसकी विषमता और असमान बटवारा है। कभी कभी यह स्थानीय रूप से पड़ती है। कभी कभी एक शहर के एक भाग में वर्षा होती है और दूसरे भाग में बिल्कुल नहीं होती। यहां तक कि कभी कभी एक मन में फर्क पड़ जाता है। एक ही नगर में दो स्थानों पर वर्षा के माप में ५० से ७५ मिलीमीटर तक वर्ष भर में अन्तर पड़ जाता है।

इस प्रदेश में जल ही जीवन है। वर्षा के आने ही मानो नर और अमर प्राणियों में जीवन आ जाता है। वनस्पति लहलहा उठती है। हरी हरी दूब घास और हरियाली बिछा देती है। भूमि हरी भरी हो उठती है। किसानों के हृदय खिल उठते हैं। जिनके घर में दूध की हिलोरें उठ पड़ती हैं। प्रकृति की नस नस में जीवन का नवीन संचार हो उठता है। पशु पक्षी भी प्रसन्न नजर आते हैं। वर्षा आरम्भ होते ही तापक्रम एक दम गिर जाता है।

शीत ऋतु —

जाड़े का मौसम कठोर होता है इसका तापक्रम २० से० ग्रे० तक रहता है। शीतकालीन वातावरण बहुत सुहावना होता है। आकाश स्वच्छ रहता है। मन्द मन्द वायु चलती है तथा वायु में नमी की मात्रा बहुत कम

हाती है। दिन म रात्रि की अपक्षा तापक्रम अधिक रहता है। कभी कभी रात म पाला भी पड़ जाता है और न्यूनतम तापमान २ स० ग्र० तक गिर जाता है। अधिकतर मौसम शुष्क रहता है। सर्दी क दिनो म पश्चिम की ओर स आने वाले तूफानो से इस जिले म थोड़ी वर्षा हो जाती है। सर्दी के मौसम म वर्षा का यह मात्रा २५ मिलीमीटर क ग्रासपास हाती है किन्तु कृषि के लिये इसका विशेष महत्व है। रबी की फसल क लिय यह अत्यन्त लाभप्रद है क्योंकि इस समय गेहू, चना आदि खेतो म सिचाई के द्वारा तयार किय जा रहे होते हैं। इस वर्षा को 'मावट' कहत हैं।

ऋतुओ का सबस खराब जाड़ा तक कमजोर मानसून और उसके बाद कम सर्दी की वर्षा का है। इस प्रकार क कुछ वर्ष म बारानी जमीन म बोया फसल खरीफ और रबी दोनो ही खराब हो जाती हैं। अगर वर्षा ज्यादा हो जाय तो भी वह लाभदायक नहीं होती क्योंकि लम्बी और जोरदार मानसून स रबी की बिजाई म बाधा पड़ती है। अप्रैल म अगर ज्यादा वर्षा हो जाय तो यह फसल को नष्ट कर देती है जबकि गर्मी और सर्दी की अधिक वर्षा मनुष्य और पशु दोनो क लिए ही लाभदायी नहीं है।

अथेरिया के दिनो की सख्या

जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
०	०१	०३	१~	[illegible]	६	४

अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्षभर
२८	१८	०४	०३	०१	२३

औसत वर्षा (मिलीमीटर मे) और वर्षा के दिनो की सख्या

	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
वर्षा	६५	११/	४२	५०	६४	३१०	६८३
दिन	०८	१६	०७	०	०७	१९	३

अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्षभर
७० ६	६ ८	१ १	० ०	३ ३	२१५ ८
२ ७	० ७	० २	० ०	० ८	०५ २

हवा की औसत गति (कि० मी० प्र० घंटा)

जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
५ ६	९ ७	८ २	८ ८	१० ७	१२ ६	११ ८

अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्षभर
६ ४	८ ९	७ ०	४ ३	५ ७	८ ४

(३) प्राकृतिक वनस्पति

किसी प्रदेश का मयन एव सम्पन्न बनाने म प्राकृतिक वनस्पति का ान बहुत महत्वपूर्ण होता है। जलवायु की विभिन्न दशाओं एव अन्य रणों म भूमि पर अनेक प्रकार के पेड पौधे प्राकृतिक रूप म उग आते हैं ह वनस्पति कहते हैं। वनस्पति, भूमि के ऊपर उगने वाली प्राकृतिक पत्ति है। प्राकृतिक वनस्पति के अन्तर्गत घास, झाडियां तथा वन मिल हैं।

हमारा जिला मरुस्थलीय वनस्पति प्रदेश म आता है। इस प्रकार की नस्पति ५० स० मी० स कम वर्षा वाले प्रदेश म पायी जाती है। वर्षा की ाति म कमी के कारण वृक्षों म पत्तियां कम छोटी और कांटेदार होती हैं। ना की जडे लम्बी होती हैं। इस प्रकार कई प्रकार के बबूल यहां बहुतायत उगते हैं। नाटी व खेजडे के वृक्ष भी पैदा होते हैं। यह बहुत कम जन ाहत है। मनुष्य के लिए घास अथवा भाड़ियां की अपेक्षा वन सम्पदा कहीं ाधिक उपयोगी होती है। इस जिले के केवल २ ६ प्रतिशत भाग पर ही वन ाये जाते हैं।

वनों का प्रबन्ध—

वनों के आर्थिक महत्व का अनुभव करते ही सरकार ने वनों के

जाती है। दिन म रात्रि की अपेक्षा तापक्रम अधिक रहता है। कभी कभी रात म पाला भी पड जाता है और न्यूनतम तापमान २ से० ग्र० तक गिर जाता है। अधिकतर मौसम शुष्क रहता है। सर्दी के दिनो म पश्चिम की ओर म आने वाले तूफानो से इस जिले म थोडी वर्षा हो जाती है। सर्दी के मौसम म वर्षा की यह मात्रा २५ मिलीमीटर के आसपास होती है किन्तु कृषि के लिये इसका विशेष महत्त्व है। रबी की फसल के लिये यह अत्यन्त लाभप्रद है क्योकि इस समय गेहू, चना आदि खेतो म सिचाई के द्वारा तयार किये जा रहे होते हैं। इस वर्षा को मावट कहते हैं।

ऋतुओ का सबसे खराब जोड एक कमजोर मानसून और उसके बाद कम सर्दी की वर्षा का है। इस प्रकार के चुर वष म बारानी जमीन म बोया फसलें खरीफ और रबी दोनो ही बर्बाद हो जाती हैं। अगर वर्षा ज्यादा हो जाय तो भी वह लाभदायक नहा होता क्योकि लम्बी और जोरदार मानसून से रबी की बिजाई म बाधा पडती है। अप्रैल म अगर ज्यादा वर्षा हो जाय तो वह फसल को नष्ट कर देती है जबकि गर्मी और सर्दी की अधिक वर्षा मनुष्य और पशु दोनो के लिए ही लाभकारी नहा है।

अंधेरिया के दिनो की सख्या

जनवरी	फरवरी	माच	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
०	०१	०३	१~	·	६	५

अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्षभर
२८	१८	०५	०३	०१	२७

औसत वर्षा (मिलीमीटरों में) और वर्षा के दिनों की संख्या

	जनवरी	फरवरी	माच	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
वर्षा	६८	११५	४३	५०	८४	२१०	६८३
दिन	०८	१६	०३	०६	०७	१८	३१

	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्षभर
वर्षा	७० ६	६ ८	१ १	० ०	३ ३	२१५ ८
दिन	२ ७	० ७	० २	० ०	० ८	०५ २

हवा की औसत गति (कि० मी० प्र० घंटा)

जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई
५ ६	६ ७	८ ५	८ ८	१० ७	१३ ६	११ ८

अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	वर्षभर
९ ४	८ ९	७ ०	४ ७	५ ७	८ ४

(३) प्राकृतिक वनस्पति

किसी प्रदेश को सफल एवं सम्पन्न बनाने में प्राकृतिक वनस्पति का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। जलवायु की विभिन्न दशाओं एवं अन्य कारणों से भूमि पर अनेक प्रकार के पेड़ पौधे प्राकृतिक रूप से उग आते हैं उन्हें वनस्पति कहते हैं। वनस्पति, भूमि के ऊपर उगने वाली प्राकृतिक सम्पत्ति है। प्राकृतिक वनस्पति के अन्तर्गत घास, झाड़ियां तथा वन शामिल हैं।

हमारा जिला मरुस्थलीय वनस्पति प्रदेश में आता है। इस प्रकार की वनस्पति ५० सं० मी० से कम वर्षा वाले प्रदेश में पायी जाती है। वर्षा की प्राप्ति में कमी के कारण वृक्षों में पत्तियां कम, छोटी और कांटेदार होती हैं। वृक्षों की जड़ें लम्बी होती हैं। इस प्रकार कई प्रकार के बबूल यहां बहुतायत में उगते हैं। जाटी व मजबूत के वन भी पैदा होते हैं। यह बहुत कम जल चाहते हैं। मनुष्य के लिए घास अथवा झाड़ियों की अपेक्षा वन सम्पदा कहीं अधिक उपयोगी होती है। इस जिले के केवल ३ २ प्रतिशत भाग पर ही वन पाये जाते हैं।

वनों का प्रबन्ध –

वनों के आर्थिक महत्त्व को अनुभव करके ही सरकार ने वनों के

संरक्षण की नीति अपनाई है। समस्त वन सरकार की सम्पत्ति समझे जाते हैं। उनका प्रबंध वन विभाग करता है। गंगानगर जिले को इस बात का गर्व है कि राजस्थान में सिंचित वन की शुरूआत यहां हुई है। 'थार के रेगिस्तान' में वनों को उगाना एक बहुत बड़ा प्रयास था। नहरों ने इस वन योजना को कुछ आशा बंधाई। गंगनहर के आने पर वितरक नहरों के सहारे सहारे पेड़ लगाये गये। अन्य नहरों के आने पर पेड़ों के लगाने का क्रम जारी रहेगा।

हनुमान गढ़ का बीड़ —

बीकानेर राज्य के जमाने में हनुमानगढ़ बीड़ नामक एक जंगल था। यह हनुमानगढ़ कस्बे के पूर्व में स्थित था और १० ००० एकड़ के क्षेत्रफल में फैला हुआ था। इसकी लम्बाई १० मील और चौड़ाई २ से ४ मील तक थी। यह सारा क्षेत्र घग्घर की घाटी में होने के कारण हर साल बाढ़ से प्रभावित हो जाता था। इस क्षेत्र में जांटी, खेजड़ी, बबूल, जाल, बेरी आदि के वृक्ष थे। यह स्थान शिकारगाह के रूप में सुरक्षित था। १९५३ में जयपुर राज्य के भूतपूर्व जागीरदारों के बसाने के लिए इस सुन्दर बीड़ को काट डाला गया। उसके स्थान पर बारानी गांव में एक नया वन उगाने का वन विभाग ने १९५७ से कार्य शुरू किया है। यह वन ५००० एकड़ में फैला होगा और नहरों द्वारा सिंचित क्षेत्र में होगा।

जिले में पाये जाने वाले पेड़ —

खेजड़ा — खेजड़े के पेड़ इस जिले में बहुतायत से उगते हैं। इसकी फली को सांगरी कहते हैं और उसको तरकारी में इस्तेमाल करते हैं। खेजड़े की लकड़ी घटिया किस्म की होती है। काटने के थोड़े दिन बाद उसमें कीड़ा लग जाता है और कुछ महीनों में उसका चूरा साफ हो जाता है। इसकी लकड़ी गोबर में दबाकर रखने से, या कुछ दिन पानी में डूबी रखने से या नमक में डुबाकर रखने से मजबूत हो जाती है और कीड़ा नहीं लगता। इसकी लकड़ी इमारती काम की नहीं है लेकिन देहाती लोग अपने कच्चे मकानों, छप्परों में

इसको काम म लेते हैं। हल, गाडी की पूठी इत्यादि बनाने म यह काम आती है।

फोग—इस जिले के कुछ भागो म फोग के पड भी पाय जाते हैं। इस पड को बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है। इसके फूल को लोग खान के काम म लेत हैं। इसकी लकडी जलान क काम आती ह।

रोहिडा—रोहिडा भी इस जिले म देखा जाता है। माच के महीने म इस पर फूल आता है और बडा सुदर लगता है।

कैर—कर के पड भी यहा पदा होत है। इसका फल टट कहलाता है। इसको लोग खात हैं, सब्जी व अचार बनात है और सुखाकर भी काम म लाते हैं।

जाल जाल पर फल मई व जून म आता है उसको पीलू कहते ह। उस लोग खात ह।

बेरी—कई प्रकार के बेरी के पड इस जिले म उगते है। इनके बेर खाने के काम आत ह। इनको सुखाकर पीसकर भी ग्रामीण लोग खात ह। इनके सूखे पत्ता को पाला कहते ह और उस जानवरो को खिलाने के काम में लाते हैं। इनके काटो को बाढ लगाने के काम मे लेते है।

बबूल या कीकर—यह वृक्ष नहरो के किनारो पर व अन्य स्थानो पर उगाया जाता है। इसकी लकडी मजबूत व कठोर होती है। इसका प्रयोग अधिकतर ईधन की तरह होता है। गाडियो, हल व कृषि के अन्य औजार बनाने म भी इसकी लकडी का प्रयोग किया जाता है।

शीशम—शीशम के वृक्ष इस जिले म नहरो के किनारे उगाये गये हैं। यह लकडी भूरे रग की होती है और साधारणतया कठोर तथा टिकाऊ होती है। यह नक्काशी तथा टिकाऊपन के लिये विख्यात है। फर्नीचर के लिए यह लकडी बहुत उपयुक्त मानी जाती है तथा इससे अलमारिया मेज, कुर्सी आदि बनाई जाती हैं। इमारती कामो मे भी इसका खूब प्रयोग होता है। इससे दरवाजे किवाड व खिडकिया भी बनाये जाते हैं।

शहतूत—शहतूत के वृक्ष भी काफी मात्रा में जिले में उन स्थानों में लगाये गये हैं जहां सिंचाई की सुविधा प्राप्त है। इसकी लकड़ी मुलायम और मजबूत होती है। खेल का सामान बनाने के लिये इसका प्रयोग होता है।

लाना—तहसील सूरतगढ़ और अनूपगढ़ में एक झाड़ी अपने आप उग आती है जिसको लाना कहते हैं। इस झाड़ी को जमीन में गढ़ा खोद कर जला देते हैं। उसका रस निकल कर जमीन में गड़े हुए घड़ों में जमा होता रहता है जो सूख कर ढेलों के रूप में इकट्ठा हो जाता है। इसको 'सज्जी' कहते हैं। यह निम्न श्रेणी का सोडा होती है। यह पापड़ आदि बनाने के काम आती है।

आक—आक यहां खूब होता है। इसकी लकड़ी को ग्रामीण लोग जलाने के काम में लेते हैं। उसकी लकड़ी के पोस्त से रस्सी बनाते हैं जो मजबूती में सन के बराबर होती है।

पन्नी—नाली के क्षेत्र में पन्नी घास काफी मात्रा में पैदा होती है यह छप्पर बांधने के काम आती है। उसकी जड़ें निकाल लेते हैं। वह खस कहलाती है। गर्मी के मौसम में उसकी टट्टियां बनाई जाती है।

सरकड़ा सरकड़ा भी यहां खूब उगता है। उसमें मूंज बनाई जाती है। सरकड़े के मूढ़े और पर्दे बनाये जाते हैं।

घास—थोड़ी सी वर्षा हो जाने पर भी यहां अच्छी घास उग आती है। हनुमानगढ़ सूरतगढ़ और अनूपगढ़ में घास अच्छी बड़ी और कई प्रकार की होती है जिनको 'सेवण' 'धामन' 'खीव' आदि कहते हैं। जिले भर में 'मुरट' नाम की चिपटने वाली घास बहुतायत से उत्पन्न होती है। वर्षा ऋतु में तरह तरह की घास जैसे लांपड़ी, बूर बरू आदि के उग आने के कारण ही जिले का प्राकृतिक सौन्दर्य बढ़ जाता है।

वनों की गौण उपज—

चमड़ा रंगने के पदार्थ—बबूल के वृक्ष की छाल चमड़ा रंगने के

काम आती है। हर पडो को काट कर उनकी छाल उतार ली जाती है। सूख जाने पर इससे चमडा रगने का काम लिया जाता है।

गोंद—पेडो से निकलने वाले गोंद को भी ग्रामीण लोग एकत्रित कर लेते है जो कई प्रकार के काम में आता है।

(४) पशु धन

मानव के आर्थिक विकास का सम्बन्ध पशु धन पर भी निर्भर है। पशुओं से मनुष्य को खाद्य पदार्थ तथा अनेक प्रकार के कच्चे माल प्राप्त होते है। खाद्य पदार्थों में दूध, मक्खन घी आदि का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। जूते चमडा ऊनी वस्त्र या रेशमी वस्त्र जीवो की ही देन हैं। हमारे यहा खेती में भी पशुओं का बडा हाथ है। बिना पशुओ के सहायता के यहा खेती हो ही नही सकती। गांवों में जहा न तो रेलमार्ग है और न मोटरें वहा पशु ही बोझा ढोते हैं। इस प्रकार पशुओं से हम बहुत बडा आर्थिक लाभ पहुचता है। मनुष्य के रहन सहन पर भी पशुओ का प्रभाव पडता है।

पशुओं को हम दो भागो मे बाट सकते है (१) जगली पशु और (२) पालतू पशु। हमारे जिले में जगली पशुओ की संख्या बहुत कम है पशु पालने के लिए अधिक उपयुक्त जलवायु साधारण शुष्क जलवायु होती है। मरुस्थल के चारो ओर जहा वर्षा की प्राप्ति अपेक्षाकृत कम होती है पशु अधिक पाले जाते हैं। यही कारण है कि इस जिले में अधिकतर किसान पशु पालते हैं। हमारे जिले में पशुओं की संख्या ११ ६६ ३०४ है।

पालतू पशु—

गाय-बैल—इस जिले में गाय बैलो की संख्या ३६६२०२ है। बैल का प्रयोग खेती के अनेकों कामो में होता है। वह हल खीचता है गाडिया में बोझा ढोता है अनाज पकने पर पौधों को कुचल कर अन्न और भूसा

मनग करता है । गायें दूध देती हैं जो हमारे लिये बहुत उपयोगी है । हमारे यहा राठी नस्ल की गायें पाली जाती हैं । गाय पालन का एक मात्र उद्देश्य दुग्ध प्राप्ति और बछड़ा की उत्पत्ति है ।

भैंस—हमारे जिले म भैंसा की सख्या १,८७ १०२ है । भैंस विशेषतया दूध के लिये पाली जाती हैं । भस का दूध गाय के दूध की अपेक्षा अधिक चर्बीयुक्त होता है तथा इसम घी का अनुपात कहीं अधिक होता है इसलिये दूध के लिय भस को लोग अधिक पालते हैं । भैंसा अधिक उपयोगी नही होता इनकी सख्या भसा की अपेक्षा कम है फिर भी गाड़ी खीचने तथा कृषि के साधारण कार्यो म प्रयुक्त किये जाते है । भस के लिये गाय की भांति अधिक कीमती चारे की आवश्यकता नहो होती । यह साधारण चारे पर भी अच्छा दूध देती है । ग्रीष्मकाल म जब तेज धूप पड़ती है और तापक्रम बढ़ जाता है तो भसा के दुग्ध म भी कमी हो जाती है । अक्तूबर नवम्बर के महीना म भस सबस अधिक दूध देती हैं । हमारे यहा मुर्रा नस्ल की भैंस पाली जाती है ।

भेड—पशु सम्पत्ति म भेडो का बड़ा महत्व है । वे ऊन तथा मास के लिए पाली जाती ह । हमारे जिले म नाली नस्ल की भेड पाली जाती ह । इनकी सख्या २७६३६८ है । बढ़िया नस्ल की भेडें पालन का प्रयास किया जा रहा है । उजाड़ पड़ी हुई भूमि म भेड आराम स रहती है । यही कारण है कि भेड पालना बहुत आसान है और यह सस्ता धन्धा है ।

बकरी—इस जिले म बकरियो की सख्या १६८५२१ ह जो दूध तथा गोश्त के लिए पाली जाती ह । ये मामूली चारे से अपना पेट भर लेती हैं अत गरीब लोग इन्हे पालते ह । वस्तुत यह निधन लोगों की गाय ह । बकरो का बध करके गोश्त प्राप्त किया जाता ह । इनका चमड़ा अच्छा माना जाता है । यह बहुत मजबूत होता है । इसमे बढ़िया देशी जूतियां बनाई जाती हैं । इनके बालो म नमदे व कम्बल रस्सी आदि भी बनाये जाते ह ।

ऊंट—यह शुष्क मरुस्थलीय प्रदेशों का पशु है। ऊंट सवारी के काम आता है और बोझा ढोने के लिये भी प्रयुक्त होता है। यह कई दिनों तक बिना पानी पिये रह सकता है। मरुस्थलीय प्रदेशों के लिये बहुत उपयुक्त होने के कारण इसको 'मरुस्थल का जहाज' कहते हैं। इसे हल और गाड़ियों में भी जोता जाता है। ऊंटनी का दूध दवा के रूप में व कुछ लोगों के लिए साधारण रूप में पीने के काम आता है। ऊंट की खाल के बड़े बड़े कुप्पे बनाये जाते हैं जो तेल या घी भरने के काम आते हैं। हमारे जिले में इनकी संख्या ६१२७० है।

गधा—बोझा ढोने के काम आता है। इसे साधारण भोजन की आवश्यकता होती है। इस जिले में बोझा ढोने का यह मुख्य पशु है। गाड़ी में भी जोता जाता है जो खोता गाड़ी कहलाती है। यह जिले के प्रत्येक भाग में पाया जाता है। इस जिले में गधों की संख्या ६६६२ है।

सूअर—यह एक गन्दा और अपवित्र पशु है अतः उच्च जाति के लोग इसे छूना तक भी पसन्द नहीं करते। मुसलमानों में इसके गोश्त से परहेज होता है। निर्धन और छोटी जातियां इसे पालती हैं मुख्यतः महतर इसे पालने का कार्य करते हैं। इनसे गोश्त, चर्बी तथा बाल प्राप्त होते हैं। इनके पालन से काफी आय हो जाती है। जिले में इनकी संख्या ५४२ है।

जंगली पशु—

हमारे जिले में कुछ जंगली पशु भी मिलते हैं। इनमें भेड़िया, लोमड़ी, खरगोश नीलगाय तथा हिरन मुख्य हैं। हिरन व खरगोश का शिकार किया जाता है। अनूपगढ़ और रायसिंहनगर तहसीलों में कभी कभी गोरखर भी मिल जाता है। हनुमानगढ़ तहसील में हिरन भी बहुतायत से पाये जाते हैं। इनकी दोनों जातियां—चीतल और काले—मिलती हैं। घग्घर की घाटी में चीतल भी मिलते हैं। सूरतगढ़ तहसील में नीलगाय भी पायी जाती हैं।

पक्षी—

अनेक प्रकार के पशु पक्षी हमारे जिले में मिलते हैं। तोते, कौवे चील, तीतर, गौरैया, बटबड, बटेर मुर्गी सारस बगुल आदि स्थान स्थान पर मिलते हैं। तीतर, बटेर आदि का शिकार किया जाता है हनुमानगढ़ तहसील में नाली के किनारे कुञ्ज आदि कई प्रकार के पक्षी होते हैं जिनका शिकार किया जाता है।

पशुधन पर निर्भर उद्योग--

हमारा पशुधन महत्वपूर्ण है। इससे प्राप्त होने वाले पदार्थों पर निम्नलिखित उद्योग निर्भर हैं —

चमड़े व खाल का धन्धा—

हमारे जिले में प्रतिवर्ष सकड़ों पशु मरते हैं। उनसे पर्याप्त मात्रा में खालें मिलती हैं। उत्तम किस्म के पशुओं से प्राप्त होने वाली खाल बढ़िया और मामूली पशुओं की घटिया खाल होती है। इनमें से कुछ खाल तो बिना रंगे ही बाहर निर्यात कर दी जाती हैं और कुछ स्थानीय रूप में रंग कर काम में ली जाती हैं।

मास का धन्धा—

इस जिले के निवासियों के भोजन में मांस का महत्व बहुत कम रहा है परन्तु अब वह धीरे धीरे बढ़ रहा है। मांस की पूर्ति कस्बों व नगरों के कसाइयों द्वारा की जाती है। अतः यह स्थानीय धन्धा है। यहां अधिकतर बकरा, बकरी, भेड़ तथा सूअर का ही मांस खाया जाता है। हमारे यहां कसाई कमजोर और सस्ते पशुओं को खरीद कर काटते हैं और उनका ताजा मांस बेचते हैं।

मुर्गी पालन—

मुर्गीपालन का धन्धा आर्थिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। मुर्गी केवल

मास क लिये ही नही पाली जाती बल्कि इनस अण्डे भी प्राप्त होत है। अण्डा क कारण मुर्गियो का महत्व अधिक ह। यो तो मुर्गी का गोश्त भी अच्छा माना जाता है तथा बहुत खाया जाता है परन्तु अण्डे अपने गुणो के कारण अधिक खाये जाते हैं। इस जिले म मुर्गीपालन का प्रचार अधिकतर भाग म ह परन्तु यह काम गरीब लोगो क हाथ म है। छोटी जाति के लोग अपने सहायक साधन की तरह यह काम करते ह। अत मुर्गीपालन का धधा अव्यवस्थित है। मुर्गीपालन का धन्धा बहुत कम खर्चीला है परन्तु पर्याप्त आय देने वाला है। इस जिले म मुर्गियो की संख्या ७०७२७ है। हाल ही म कुछ बड़े मुर्गीपालन केन्द्र भी स्थापित हुए है जहा यह काय वज्ञानिक तरीके म किया जाता है।

ऊन प्राप्ति --

इस जिले म २७८३६८ भेड पाली जाती ह जिनसे प्रतिवष ५८/६४ कि० ग्रा० ऊन प्राप्त होती है। प्रति भेड वार्षिक उत्पादन लगभग ८२८ ग्राम है। यहाँ की ऊन साधारण कोटि की है जिसका कारण जिले की गम जलवायु है। इस जिले से समस्त ऊन गाठ बाधने के लिये बीकानेर भेज दी जाती है। राज्य का भेड विभाग बढ़िया ऊन की उत्पत्ति बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील है। इस जिले म ऊन प्राप्त करने के धधे का पर्याप्त महत्व है अत इसका विकास किया जाना जरूरी है।

दुग्ध उद्योग --

इस जिले म दुग्ध का धधा मुख्यत कृषि के सहायक धधे के रूप म चालू है। सभी किसान पशु रखते ह और निकटस्थ नगरो म अपना दूध अथवा घी बच देते ह। जिले म उत्पादन सम्बन्धी आकडे उपलब्ध नहीं ह। अधिकतर दूध पीने के काम मे लिया जाता है। कुछ का घी निकाला जाता है और शेष का खोया मक्खन, दही इत्यादि बनाया जाता है। जो दूध हम मिलता है उसम आधे स अधिक भस स, आधे स कम गायो स मिलता है। इस जिले म अभी दुग्धशालाओ का विकास नहा हुआ है और यह धधा स्थानीय रूप स ही किया जाता है।

५ सिंचाई

गंगानगर कृषि प्रधान जिला है। खेती योग्य भूमि इस जिले में पर्याप्त है परन्तु जिले की भौगोलिक परिस्थिति तथा वर्षा का स्वभाव इस प्रकार का है कि सफलतापूर्वक कृषि कार्य चलाने के लिये सिंचाई के कृत्रिम साधनों का जुटाना अत्यावश्यक है। वर्षा के अभाव के कारण इस क्षेत्र में प्रायः एम अकाल पड़ा करते थे जिनमें जन व पशु भारी संख्या में नष्ट हो जाते थे। वर्षा की कमी और जीवन यापन के साधनों के अभाव में यह क्षेत्र बहुत ही कम आबाद था।

राजस्थान के रजवाड़ों में बीकानेर राज्य के केवल इस जिले में ही नहरों द्वारा सिंचाई का प्रबन्ध उपलब्ध था। इस जिले के कुल क्षेत्रफल २०,६१,८५७ हैक्टेयर में से केवल ८३,५३४ हैक्टेयर भूमि कृषि के अयोग्य है। कृषियोग्य भूमि में से ६,०४,८०४ हैक्टेयर भूमि पर सिंचाई होती है अर्थात् २४.७५ प्रतिशत भूमि पर सिंचाई होती है। जिले में वर्तमान में सिंचाई के लिये ४ नहरों का विस्तार है—(१) घग्घर की नहरें (२) गंग नहर (३) भाखड़ा की नहरें और (४) राजस्थान नहर।

इन नहरों से भी पहिले इस क्षेत्र में एक नहर आती थी जिसे पश्चिमी यमुना नहर कहते थे। पहले इस नहर का नाम 'फीरोजशाह' नहर के नाम से प्रसिद्ध था जिसकी बीकानेर राज्य में ३२ कि० मी० की लम्बाई थी। इस जिले के कुछ क्षेत्र में सिंचाई होती थी। बीच में इस नहर में पानी आना बन्द कर दिया गया था। बहुत प्रयत्न करने पर भादरा तहसील की १८४ हैक्टेयर भूमि इससे सींचो जाने की अनुमति पंजाब सरकार ने दी। फिर बाद में सन् १८६३ ई० में इस नहर में पानी आना बन्द हो गया। इसका कारण यह बतलाया जाता है कि उस साल अधिक वर्षा होने से यह नहर टूट गई और बहुत तबाही हुई। तत्पश्चात् इसकी मरम्मत न करके इसे हमेशा के लिए ही बन्द कर दिया गया।